।। वरखा रुत ।।

राग मलार

पावसियो आव्यो रे वरखा रुत मांहें, भोमलडी ढांकी रे वादलिए छाहे।
अंबरियो गरजे रे वीजलडी वा वाय, पिउजी विना मारे रे अमने घाए।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। १ ।।

हे वालाजी! वर्षा ऋतु के बादल आ गए हैं और उन्होंने धरती को ढांप लिया है। आसमान में गर्जना होती है। बिजली चमकती है और हवा चलती है। यह आपके बिना हमारे कलेजे में घाव लगा रहे हैं और मैं पिया-पिया करके पुकार रही हूं।

एणे समे भेला सहु घर वारी, अधखिण अलगां न थाए नर नारी।
परदेस होय ते पण आवेरे संभारी, पिउजी ऐवी केही अप्राप्त अमारी।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। २ ।।

इस समय घर के सब लोग इकट्ठे हो जाते हैं। आधे पल के लिए कोई नर-नारी अलग नहीं होते। परदेश में हों तो भी याद करके आ जाते हैं, परन्तु हे धनी ! हमारी क्यों ऐसी दशा है कि मैं आपको प्राप्त नहीं कर पा रही हूं और पिया-पिया की पुकार करती हूं।

मेघलियो आवीने असाढ धडूके, सेरडियो सामसामी रे ढलूके।
मोरलिया कोईलडी रे टहूके, एणे समे कंथ कामनियो ने केम मूके।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ३ ।।

आषाढ़ (असाढ़) के महीने में घनघोर गर्जना हो रही है। बादलों की टकराहट से पानी की धाराएं बह रही हैं। मोर और कोयल मधुर ध्वनि कर रहे हैं। ऐसे समय में धनी अंगनाओं को कैसे छोड़ सकते हैं? मैं पिया-पिया कर आपको पुकार रही हूं।

वाला मारा भोमलडी रे नीलाणी, मेघलियो वली वली सींचे पाणी।
वीजलडी चमके आभण माणी, रे पिउजी तमे एणे समे वेदना न जाणी।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ४ ।।

हे मेरे वालाजी! धरती हरी भरी हो गई है। ऊपर से बादल बार-बार पानी बरसाते हैं (सींच रहे हैं)। बिजली आसमान में चमकती है। हे धनी ! आपने ऐसे समय में हम विरहिणियों के दुःख को नहीं जाना और मैं पिया-पिया की पुकार कर रही हूं।

रे वालाजी श्रावणियो सलसलियो, आंभलियो आवीने भोमे लडसडियो।
चहु दिस चमके गरजे गलियो, पिउडा तूं हजिए कां अमने न मलियो।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ५ ।।

हे वालाजी! सावन के महीने में धरती पर अधिक पानी से कीचड़ हो गया है। बादल आकर धरती पर झुक रहे हैं। चारों दिशाओं में चमक और गर्जना होती है। हे धनी! इस समय आप हमें क्यों नहीं मिलते। मैं पिया-पिया की पुकार कर रही हूं।

पिउजी तमे पेहेली कां प्रीतडी देखाडी, माहेंला मंदिरियो कां दीधां रे उघाडी।
पिउजी तमे अनेक रंगे रमाडी, हवे तो लई आसमाने भोम पछाडी।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ६ ।।

हे धनी! पहले आपने क्यों इतना प्रेम दिखाया? हमारे मन के अन्दर के दरवाजे खोल दिए। पहले इतना आनन्द क्यों दिया और अब आसमान से पृथ्वी पर पटक दिया और मैं पिया-पिया करके पुकार करती हूं।

।। प्रकरण ।। ६ ।। चौपाई ।। ३६ ।।

बारहमासी का कलस

राग मलार

वाला मारा खटरुतना बारे मास, हां रे तेना अहनिस त्रण से ने साठ।
वाला तारी रोई रोई जोई में वाट, अम ऊपर एवडो कोप कीधा स्या माट।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। १ ।।

हे मेरे वालाजी! छः ऋतुओं के बारह महीने होते हैं। उनके तीन सौ साठ दिन और रातें होती हैं। जिनमें रो-रोकर आपके आने की राह देखी। हमसे इतने नाराज क्यों हो गए हैं। मैं पिया-पिया करके पुकारती हूं।

वाला मारा हुती रे मोटी तारी आस, जाण्यूं अमने मूकसे नहीं रे निरास।
ते तो तमे मोकल्यो तमारो खवास, तेणे आवी वछोड्या सांणसिए मास।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। २ ।।

हे मेरे वालाजी! मुझे आप पर पूरा विश्वास था कि आप हमें निराश करके नहीं छोड़ोगे। हे धनी! आपने अपने इस दूत ऊधव को भेजा जिसने हमारे शरीर से अपने वचनों की सांसी (संड़सी) से मांस खींचा है (आपको हमारे से जुदा करके ले गया)। मैं पिया-पिया की आवाज करके पुकारती रही।

रे वाला भलुं थयुं रे भ्रांतडी भागी, हांरे तारे संदेसडे अमे जागी।
हांरे एणे वचने रुदे आग लागी, हवे अमे जाण्यूं चोकस अमने त्यागी।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ३ ।।

हे वालाजी! अच्छा हुआ कि हमारा भ्रम मिट गया और आपके सन्देश से हम सावचेत (सावधान) हो गए। आपके इन वचनों से हमारे हृदय में आग लगी है। हम जानती हैं कि आपने निश्चय ही हमें छोड़ दिया है और मैं पिया-पिया करके पुकारती हूं।

रे ऊधव तूं भली रे वधामणी लाव्यो,अमारे काजे सूलीने सांणसियो लई आव्यो।
ऊधव तें तो अक्रूर पर इंडू रे चढाव्यो, ऊधव तें दुखडा घणूंज देखाड्यो।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ४ ।।

हे ऊधव! तू अच्छा समाचार लेकर आया। हमारे लिए फांसी (शूली) के लिए संड़सी लेकर आया है। हे ऊधव! तुम्हारे सन्देश ने हमें बहुत कष्ट पहुंचाया। हे ऊधव! जिस समय अक्रूर कृष्ण को गोकुल से मथुरा ले गये उस समय हमें जो दुःख हुआ, उससे भी अधिक कष्ट देने वाला संदेश रूपी कलश हमारे ऊपर चढ़ाया (हमारे लिए प्राणघातक समाचार लाया)। मैं तो अपने श्याम को पिया-पिया करके पुकारती हूं।